विश्वबन्धुत्व दिवस 25 अगस्त पर आध्यात्म ज्ञान का ज्योति पूंज थी प्रकाशमणि दादी

डॉ. श्रीगोपालनारसन
रूड़की

प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविधालय का प्रकाश देश–विदेश में पहुंचाने और विश्वविद्यालय के सेवा केन्द्रों का विस्तार दुनिया के 140 देशों में साढे आठ हजार की संख्या तक करने का श्रेय अगर परमात्मा शिव की कृपा से किसी को जाता है तो वह संस्था की मुख्य प्रशासिका रही दादी प्रकाशमणि है। आध्यात्म के रास्ते राजयोग के माध्यम से सीधे परमात्मा शिव का बोध कराने वाली इस सस्था ने दुनिया से विकारों को दूर करने तथा पावन पवित्र बनने का ऐसा अभियान चलाया कि सस्था में जो साधक सख्या 400 तक थी, वह आज लाखों में है। जिसके लिए दादी प्रकाशमणि का कुशल नेतृत्व ही सफलता का कारक रहा है। दादी प्रकाशमणि कहीं कुशल प्रशासक नजर आती तो कही प्यार की मूरत के रूप में सबको प्यार का संदेश दे रही होती। दिव्य गुणों की खान प्रकाशमणि का व्यक्तित्व चुंबकीय था, यानि जो भी एक बार दादी के संपर्क में आ जाता तो उनका मुरीद हो जाता। सभी को उमंग, उत्साह, सीख और आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाली दादी प्रकाशमणि ब्रहमाकुमारी मिशन के प्रमुख पद पर रहते हुए भी एक आम इंसान की तरह थी और स्वयं को शिव बाबा का ट्रस्टी समझकर बड़ी से बड़ी समस्या का हल मिनटों में निकाल देती थी। उन्हे विश्व एकता की संवाहक माना जाए तो गलत नहीं होगा।

दिव्य विभूति दादी प्रकाशमणि का जन्म 1 जून सन् 1922 को पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत के अंतर्गत हैदराबाद में हुआ था। जब सन् 1937 में उस समय के प्रसिद्ध हीरा व्यापारी एवं जाने–माने सेठ दादा लेखराज को परमात्मा के सत्य स्वरूप व भावी नई दुनिया का अलौकिक साक्षात्कार हुआ और उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति वर्ल्ड रिन्यूवल ट्रस्ट का निर्माण कर नई दुनिया की स्थापना के लिए उसमें निहित कर दी। वही मात्र 14 वर्ष की आयु में रमा देवी नामक बालिका ने दादा लेखराज के प्रति पुत्रीवत समर्पण करके अलौकिक ईश्वरीय ज्ञान रूपी यज्ञ में आहुति डालने का काम किया जिससे उन्हें भी ज्योति स्वरूप शिव व नई सतयुगी दुनिया के साक्षात्कार हुए और वे रमा देवी से प्रकाशमणि बन गई।

हर किसी का मधुर मुस्कान से स्वागत कर दिल जीत लेने वाली कर्मयोगिनी प्रकाशमणि की पवित्रता और सरलता के सभी कायल थे। उन्होंने जीवनभर प्यार की सौगात दी और जीवन जीने की कला जन सामान्य को सिखायी। प्रजापिता ब्रहमाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय को पांच द्वीपों तक फैलाने में दादी प्रकाशमणि का अहम योगदान है। जिनके नेतृत्व में संस्था ने देश–विदेश में तरक्की की और मधुबन का इतना विस्तार किया कि आज माउंट आबू की पहचान ही मधुबन यानि बाबा का धर से होने लगी है। चाहे शांति वन का विशाल परिसर हो और उसमें स्थित 20 हजार व्यक्तियों की क्षमता का डायमंड सभागार अथवा उसी परिसर में 35 हजार से 50 हजार तक के व्यक्तियों की भोजन निर्माण व्यवस्था की नई प्रदुषण रहित किचन या फिर मनमोहक भवन, रेडियों मधुबन, पीस ऑफ माइंड चैनल, गॉडली वुड फिल्म स्टूडियों , ज्ञानामृत एवं ओम शांति मीडिया समाचार पत्र, ज्ञान सरोवर, पांडव भवन, यूनिवर्सल सभागार, पीस पार्क का आधुनिकीकरण सब कुछ दादी प्रकाशमणि की दूरदर्शिता, कुशल नेतृत्व व कर्मशीलता की देन है। लेकिन फिर भी दादी प्रकाशमणि एक आम इंसान ही बनी रही और परमात्मा शिव व ब्रहमा बाबा की ट्रस्टी बनकर संस्था में चार चांद लगाती रही।

जहां पड़े कदम वही सफलता का इतिहास लिख देने वाली प्रकाशमणि विनम्रता की प्रतिमूर्ति थी, गुणों की खान थी, अनुभव की निधि थी और फरिश्ता समान होकर सबके दुःख हर लेने वाली देवी थी। आत्म विश्वास से लबरेज दादी प्रकाशमणि ने कथनी और करनी में समानता रखी और सत्यता की शक्ति से एकता की सूत्रधार बनकर दुनिया भर को शांति, सुख और सर्वगुण संपन्नता की राह दिखाई। तभी तो उन्हे अंतर्राष्ट्रीय शांतिदूत होने का सम्मान हासिल हुआ। दादी प्रकाशमणि ऐसी आध्यात्म ज्ञान की विभूति थी जिन्होनें देश–विदेश में बड़ी से बड़ी हस्ती को ईश्वरीय ज्ञान दिया और परमात्मा की सत्ता का बोध उन्हें कराया। तभी तो पाश्चात्य सभ्यता को छोड़कर अनेक देशी–विदेशी भाई–बहन न सिर्फ विकारों को त्यागकर शिव बाबा के ज्ञान में आए बल्कि पावन व पवित्र बनकर दुनिया में बदलाव का संदेश दिया। तभी तो दादी प्रकाशमणि को आध्यात्म ज्ञान का ज्योतिपुंज माना जाता है। जो शरीर छोड़ देने के बाद भी आत्मस्वरूप में दुनिया को प्रकाशमान किए हुए है। इसीलिए वे रमादेवी के बजाए प्रकाशमणि कहलाती है। 25 अगस्त सन् 2007 में दादी प्रकाशमणि ने माउंट आबू में ही अपने नश्वर शरीर को त्याग दिया और परमात्मा के पास जाकर आत्म स्वरूप में लीन हो गई। तभी से ब्रहमाकुमारी का परिवार दुनिया भर में दादी प्रकाशमणि के शरीर मुक्ति दिवस को विश्व–बन्धुत्व दिवस के रूप में मनाता है। ऐसी महान दिव्य विभूति दादी प्रकाशमणि को उनकी स्मृति दिवस पर शत्–शत् नमन।